वर्ष 11, अंक 39,अक्तुबर-दिसंबर 2021

मूल्य
₹ 150/-

UGC Care Listed
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

नागफनी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

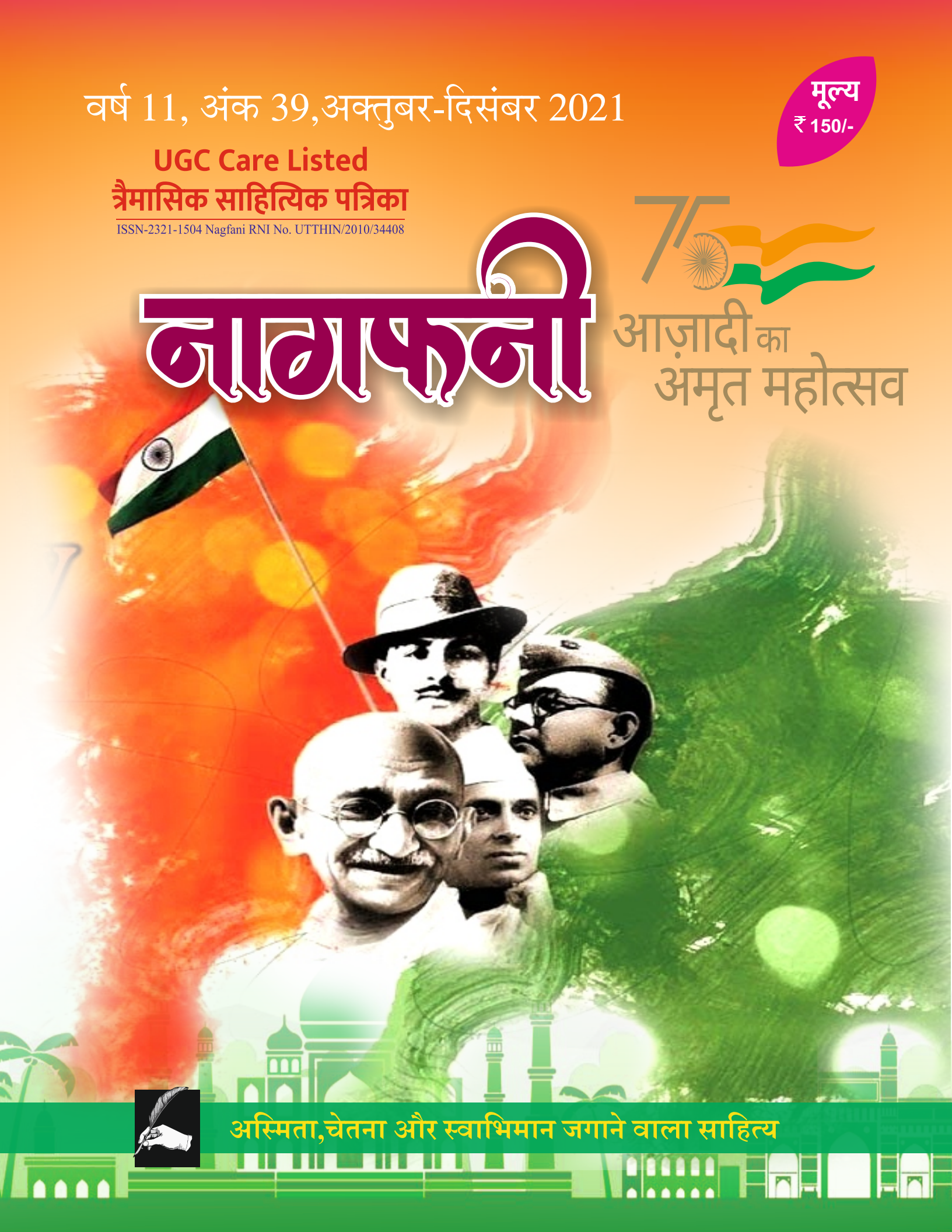

अस्मिता,चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No.UTTHIN/2010/34408

संपादक
सपना सोनकर

सह-संपादक
रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. एन. पी. प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

अतिथि संपादक
प्रोफेसर विजय कुमार रोडे

नागफनी

A Peer Reviewed Referred Journal

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Naagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408
वर्ष 11, अंक 39,अक्तुबर-दिसंबर 2021

सलाहकार मंडल (Peer Review Committee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर आर.जयचंद्रन तिरूअंनंतपुरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह, रीवा (मध्यप्रदेश)
डॉ. एन. एस. परमार, बड़ोदा (गुजरात)
प्रोफेसर दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी. नगर (गुजरात)
डॉ. उमाकांत हजारिका, शिवसागर, (असम)
प्रोफेसर संजय एल. मादार, धारवाड (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोबिन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. दादासाहेब सालुंके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)

मुख पृष्ठ- डॉ.आजम शेख, मैत्री ग्राफिक्स , सावंगी (ह),औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

प्रकाशन/मुद्रण
प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ. एन. पी. प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा
नमन प्रकाशन 423/A अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
दून व्यू काटेज स्प्रिंग रोड, मसूरी-248179, उत्तराखण्ड दूरभाष: 0135-6457809 मो. 09410778718

शाखा कार्यालय
पी.डब्ल्यू. डी.आर-62 ए, ब्लाक कालोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म.प्र. 486886, मो. 097529964467
सहयोग राशि-150/- रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000, रुपये पंचवार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/- रुपये
पंचवार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए 3000/- रूपये, विदेशों में $50 आजीवन व्यक्ति 6000/- रुपये 10000/- रुपये

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक AC83671001382 82 IFSC Code-IPOS0000001,Branch -SIDHI(NIRAT Prasad Prajapati)

नोट:- पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक - संचालक पूर्णतय: अवैतनिक एवं अध्यावसायिक है। **नागफनी'** में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वंय के हैं, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। **"नागफनी"** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीआर्ड बैंक/चेक/ बैंक ट्रांसफर /ई-पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/- अतिरिक्त जोड़ दें।

नागफनी

अनुक्रम पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय..... 01

साहित्यिक विमर्श

1. इक्कीसवीं सदी की कहानियों में चित्रित सामाजिक यथार्थ- डॉ.पठान रहीम खान 02-04
2. उपनिवेशवाद के आईने में ' मय्यादास की माडी' - डॉ.सुमा एस. 05-06
3. विष्णु प्रभाकर के ध्वनि नाटकों का शिल्पगत अध्ययन-डॉ.कल्पना मौर्य 07-09
4. अप्रस्तुत योजना और छायावादी कविता -डॉ.समय लाल प्रजापति 10-11
5. विमर्शों में उलझता समकालीन साहित्य व समाज- डॉ.उर्विजा शर्मा 12-13
6. अज्ञेय की लम्बी कविता : 'असाध्य वाणी'-डॉ.सचिन कदम 14-15
7. समकालीन हिन्दी कविताओं में पर्यावारण चिंता-डॉ.सुनील पाटील 16-18
8. दामोदर मोरे की कविताओं में अम्बेडकरवादी चेतना-डॉ.शिराजोद्दीन 19-21
9. आम आदमी का उपनिषद: राम चरितमानस-डॉ.उमा वाजपेयी/अनीता मिमरोट 22-24
10. धूमिल की कविताओं में पारिवारिक चित्रण- आरती सिंह राठौर/ डॉ.रेशमा अंसारी 25-26
11. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में सामाजिक चित्रण- डॉ.सुशीला 27-29
12. सुशीला टाकभौरे के साहित्य में संघर्ष - डॉ.मंजुला चौहान 30-31
13. मंजुल भगत की कहानियों में बदलते पारिवारिक संबंध- सुनिता यादव 32-33
14. 'सभा पर्व ' उपन्यास में चित्रित जीवन और समाज-डॉ.मोहम्मद फीरोज खान 34-37
15. मुस्लिम समाज में चित्रित असमानता की भावना : ' कुठाँव' उपन्यास के संदर्भ में- शेख उस्मान 38-40
16. बाबुराव बागुल कृत ' विद्रोह ' कहानी में विद्रोही चेतना- डॉ.भानुदास आगेडकर/ डॉ.अरूण सोनकांबले 41-43
17. समकालीन कविता का अस्तित्व वादी रूप और मूल्यबोध-डॉ.मार्तण्ड कुमार द्विवेदी 44-48
18. 'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास में आत्मसंघर्ष एवं पवित्र प्रेम की अभिव्यंजना- डॉ.गौकरण जायसवाल 49-52
19. हिंदी और कन्नड मुस्लिम उपन्यासकारों का साहित्यिक योगदान- मेहराज बेगम सैयद/डॉ.राजु बागलकोट 53-55
20. लोककथा का मौलिक सर्जनात्मक प्रयोग: सींगधारी नाटक- ईषा वर्मा 56-57

दलित विमर्श

1. 'गोदान' के मिथ का विरोधी उपन्यास रूपनारायण सोनकर का उपन्यास 'सुअरदान'-प्रो.ओम राज 58-62
2. दलित,स्त्री और आदिवासी साहित्य की वैचारिकी-डॉ.सविता शर्मा 63-65
3. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में वेदना और विद्रोह-डॉ.जयरामन पी.एन. 66-68
4. आधुनिक हिन्दी कहानियों में दलित चेतना- डॉ.विनय कुमार चौधरी 69-70
5. रूद्र प्रयाग जनपद में दलितों की स्थिति में परिवर्तन का ऐतिहासिक अध्ययन- प्रभाकर पाण्डेय 71-73
6. 'संघर्ष 'कहानी संग्रह में चित्रित दलित जीवन-डॉ.पी.महालिंगे 74-76
7. दलित जीवन की कथा ' अपने -अपने पिंजरे'- डॉ. ओम प्रकाश 77-79
8. हिंदी दलित आत्मकथाओं में विद्रोही स्वर- डॉ.अम्बर कुमार चौधरी 80-82
9. 'सद्गति' कहानी का फिल्मी रूपान्तरण : एक अध्ययन-डॉ.धीरेन्द्र कुमार 83-86
10. समकालीन हिंदी कविता में दलित प्रतिरोध के स्वर-मुकेश कुमार मिरोठा 87-89
11. 'अब और नहीं ..' में अभिव्यक्त दलित कविता की सामाजिक संस्कृति-शिवपाल 90-91

बाबुराव बागुल कृत'विद्रोह'कहानी में विद्रोही चेतना

-डॉ.अरुण सोनकांबले
सहायक प्राध्यापक ,हिंदी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय,वाई ,सातारा-412803

-डॉ.भानुदास आगेडकर
सह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,हिंदी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय,वाई ,सातारा-412803

प्रस्तावना :

वर्णव्यवस्था के आधारपर भारतीय समाजको ब्राह्मण ,क्षत्रिय ,वैश्य और शूद्र के रूप विभजित किया है। एक दूसरा भी वर्ग है जो अवर्ण है ,जिसे गाँव के बाहर फेंका गया है । साथ ही यह इन चार वर्णों की सेवा करें ऐसी मानवनिर्मित व्यवस्था बनाई जिसका पूरा लाभ ,सुख सुविधाएँ एक ही वर्ग को मिलती आयी है। इस व्यवस्था को आजतक बरकरार रखनेवाला एक अनुकूल वर्ग है और दूसरा प्रतिकूल वर्ग इसे मिटाने की कोशिश अनेक सालों से कर रहा है। यह संघर्ष विद्रोही चेतना के माध्यम से प्रखरता के साथ प्रस्तुत हुआ है। यह विद्रोही चेतना संत कबीर की वाणी ,महात्मा जोतिबा फुले ,छत्रपति शाहू महाराज और बाबासाहब डॉ .भीमराव आंबेडकर जी के आंदोलन और साहित्य के माध्यम से उभर चुकीहै । बाबासाहब की प्रेरणा लेकर ,संवैधानिक अधिकारों से जागृत होकर १९५० के बाद मराठी में प्रचुर मात्रा में साहित्य जिसमें दलित ,शोषित ,पीड़ित ,वंचित ,मजदूर ,स्त्री और सर्वहारा आदि वर्गों के दुःख का बयान करता हुआ लिखा जाने लगा । इसमें साहित्य सम्राट अन्नाभाऊ साठे,गंगाधर पाणतावने, बाबुराव बागुल ,नामदेव ढसाल, राजा ढाले और अर्जुन डांगले आदि का साहित्य काफी चर्चित है। प्रस्तुत साहित्य दलित पैंथर और आंदोलन के लिए काफी महत्वपूर्ण था । विद्रोह और विद्रोही चेतना जो आंबेडकरी चेतना का एक भाग है,वह अत्यंत तीव्रता के साथ रेखांकित हुई है।प्रस्तुत शोध-प्रपत्र बाबुराव बागुल द्वारा लिखित 'जेव्हा मी जात चोरली होती' (जब मैंने जाति चुराई थी) में चित्रित 'विद्रोह' पर आधारित है।

प्रपत्र सारांश :

मराठी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यिक बाबुराव बागुल द्वारा लिखित 'जेव्हा मी जात चोरली होती' (जब मैंने जाति चुराई थीं) में 'विद्रोह' कहानी है । इसमें कहानी का नायक जय ,जय के पिताजी प्रभू ,जय की माँ भानी ,पत्नी शांती, ठेकेदार और मैला गाड़ी ढ़ोकर ले जाने वाला गाड़ीवाले का वर्णन है। जय जाति से भंगी है। भंगी जाति होने के कारण मनुष्य को शौच उठाने का काम व्यवस्था ने इनपर सौंप दिया है। लेकिन जय पहले इस काम को नकारता है बाद में पिताजी के आग्रह पर काम हाथ में लेता है इसके उपरांत इतना हीन काम करते हुए भी ऊपर गाडीवाले का चिल्लाना, काम करते हुए जय की पाँचों उँगलियाँ संडास के अंदर जाती है इससे जय पूरी तरह से चीड जाता है और उन्हीं उँगलियों से गाडीवाले को मारता है जय पढ़ा –लिखा होने के कारण उसमें विद्रोही चेतना जागृत होती है । जय में क्रांति ,परिवर्तन और विद्रोही चेतना पनपती है । बाबासाहब डॉ.भीमराव आंबेडकर जैसा विद्या का डाक्टर बननेकी ललक जय में उत्पन्न होती है।

मराठी साहित्य के महान एवं प्रसिद्ध साहित्यकार बाबुराव बागुल द्वारा लिखित 'जेव्हा मी जात चोरली होती' (जब मैंने जाति चुराई थी) एक प्रसिद्ध कहानी संग्रह है । इसमें'विद्रोह' नामक कहानी है । विद्रोह अन्याय के खिलाफ लड़ना है । आंबेडकरवादी विद्रोही चेतना वर्णव्यवस्था ,जातिव्यवस्थाको ध्वंस करने का कार्य करती है ।विद्रोह इस शब्द क़े बारे में प्रो.दामोदर मोरे ने लिखा है–"विद्रोह की अवधारणा सीमित नहीं है,विशाल है। अन्याय अत्याचार के खिलाफ बिजली जैसे टूट पड़ने का नाम है विद्रोह ।सामाजिक,आर्थिक असमानता एवं उत्पीड़न के खिलाफ रास्ते पर उतरे धधकते प्रक्षोभ का नाम है विद्रोह। जिस क्षण ग़ुलाम को गुलामी का एहसास होता है,उसी क्षण गुलामी की जंजीरों को तोड़ने की उसके मन की छटपटाहट का नाम है विद्रोह। अन्याय के खिलाफ आग बनने की तपन एवं तड़प का नाम है विद्रोही चेतना"[१]

विद्रोह मूलतः प्रस्थापित व्यवस्था ने जो असमानता फैलाई है उसको ध्वंस करने का कार्य करता है । हर क्षेत्र में एक विशिष्ट जाति को यही काम करना चाहिए ,इस तरह की गुलामी थोप देना अमानवीय कृत्य है,तो इसके खिलाफ साहित्य में उन पात्रों के माध्यम से चित्रांकन करना विद्रोही साहित्य का उद्देश्य है । विद्रोही चेतना उन अधमरे लोगों में प्राण फूंक कर लड़ने के लिए तैयार करना है । उठकर न्याय प्राप्त करने के लिए विद्रोही चेतना कार्य करती है। बाबुराव बागुल द्वारा लिखित विद्रोह कहानी में विद्रोही चेतना दिखाई देती है।इस कहानी में एक मैला ढोनेवाले बूढ़े व्यक्ति की सामाजिक,पारिवारिक,आर्थिक ,सांस्कृतिक दशा का चित्रण किया है। इसमें वह व्यक्ति मानव की शौच को अपने सिर पर ढो-ढोकर अपनी जिंदगी बीता चुका है ।उसके हाथ पैर काम नहीं कर रहे हैं। वह अब पूरी तरह से थक चुका है। साथ ही अपनी पत्नी के साथ अपना बेटा जय को भी मानवों का शौच ढोने के काम पर ले जाने को कहता है। जवान लड़का जय इस काम को नकारता है। इस कहानी में प्रभू का बेटा जय इस कहानी का नायक है। एक भंगी की नौकरी जिसे प्रभू कर चुका था। वह अब जय को करने के लिए कह रहा था। जय की पत्नी ज़ो सोलह-सत्रह साल की वह भी मन ही मन अपने पति को भंगी की नौकरी करने के लिए कह रही थीं। लेकिन जय ऐसी भंगी की नौकरी नहीं करना चाहता था। उसका अंदर से विद्रोह धधक रहा था ,विद्रोही चेतना उसके अंदर से निकल रही थी तब जय अपने पिताजी को कहता है – "पिताजी वाट्टेल ते झालं तरी मी शिक्षण सोडणार नाही .माझ्यावर बळेलादलेली भंग्याची नौकरी मी करणार नाही.उलट शिक्षण पुर झाल्यावर ,सॉक्रेटिससारखा शहाणा झाल्यावर मी या अमानुष प्रथेचा,अस्पृश्यतेचा कर्दनकाळ होऊन नाश करणार आहे ."[२]

हिंदी अनुवाद–'पिताजी कुछ भी होगा तो भी मैं शिक्षा नहीं छोडनेवाला मुझपर जबरन लादी हुई भंगी की नौकरी मैं करनेवाला नहीं इसके बदले शिक्षा पूरी होने के बाद सुकरात जैसा बुद्धिमान बनकर मैं इस अमानवीय प्रथा का ,अस्पृश्यता का दुश्मन बनकर नाश करनेवाला हूँ।

प्रस्तुत उद्धरण से ज्ञात होता है कि अस्पृश्यता के कारण वर्णव्यवस्था है। वर्णव्यवस्था के अनुसार भंगी की नौकरी लगाई है.यह भंगी की नौकरी मनुष्यों की संडास को साफ़ करनेवाली है। ऐसी नौकरी जय न करने का विद्रोह करता है। मनुष्य का मैला ढोने की कौन सी ऐसी नौकरी है। पेट की आग बुझाने के लिए कुछ भी करना यह अमानवीय है । इसे नष्ट करने के लिए जय में विद्रोही चेतना जागृत होती है। इस नौकरी के बदले जय और ज्यादा शिक्षा प्राप्त करके सुकरातजैसा बुद्धिमान बनकर इस प्रथा को जड़ से नष्ट करना चाहता है। जय शिक्षित बन गया है, इससे उसे सही क्या है और गलत क्या है

यह समझ में आ रहा है। बाबासाहब डॉ.भीमराव आंबेडकर का शिक्षित बनो और संघर्ष करो इस विचार से जय प्रेरित होकर उसमें विद्रोही चेतना जागृत हुई है।

जय के पिताजी प्रभू भंगी की नौकरी करने के कारण थककर बीमार हो चुके हैं ,इसलिए वह अपने बेटे जय को समझा रहे हैं कि जय तू नौकरी कर ,जय के पिताजी यह भी समझा रहे हैंकि अपनी माता की ओर देख ,जवान पत्नी की ओर देख वे कितना मेहनत कर रहे हैं। भंगी बनाने के लिए प्रभू अपनी आर्थिक विपन्नता को जय के सामने रख रहे हैं लेकिन जय पढ़ा लिखा होने के कारण यह काम नकारते हुए विद्रोही स्वर में कहता हैं – "केवळ या करता मी भंगी होऊ ?शाळा शिक्षण सोडून गावाची घाण काढू ?डोक्यावर मैला घेऊ ? मला भंगीच करायच होत तर शिकविलात कशाला ? माझ्या मनात स्वभिमानाचे ,ज्ञानाचे,माणुसकीचे दीप पेटविलात कशाला ?"[३]

हिंदी अनुवाद–सिर्फ इसलिए मैं भंगी बनूँ ? स्कूल ,शिक्षा छोड़कर गाँव की गंदगी निकालूँ ? सिर पर मैला लूँ ?मुझे भंगी ही बनाना था तो पढाया किसलिए ?मेरे मन में स्वाभिमान का ,ज्ञान का,मनुष्यता के दीप क्यों जलाएँ ?

उपर्युक्त उद्धरण से यह परिलक्षित होता है कि पिता प्रभू द्वारा बेटा जय को भंगी काम करने के लिए भावनिक करना यह परंपरा का वहन करना है और जय द्वारा इस काम को नकारना विद्रोही चेतना है l जय अपने पिताजी से कहता है –मुझे पढाया –लिखाया क्यों ?मेरे मन में स्वाभिमान ,ज्ञान मनुष्यता के दीप क्यों जलाएँ, इसलिए कि मैं मनुष्यों का शौच सिर पर उठा लूँ l गाँव की सारी गंदगी कोमैंसर पर नहीं उठाऊंगा इस तरह से जय ऐसा गंदा काम करने के लिए नकारता है। बाबुराव बागुल ने जय के माध्यम से इस व्यवस्था को प्रश्न किए हैं ,मानव बनकर मानव की शौच उठाना कितना घृणास्पद है । जय में विद्रोही चेतना इसलिए आती है क्योंकि उन्होंने बाबासाहब के विचारों को पढ़ा है और उसमें आंबेडकरी विचार कूट-कूट के भर गए हैं । स्वतंत्र भारत में संविधान लागू होने के बाद ६ दिसंबर १९५६ को बाबासाहब का महापरिनिर्वाण होता है ,तब से प्रथम पीढ़ी के आंबेडकरी युवा बाबासाहब के विचारों से प्रेरणा लेकर पढ़ - लिख रहे थे ,अन्याय के खिलाफ लड़ रहे थे। जो –जो अमानवीय है ,उसे मिटाने के लिए भरसक प्रयास कर रहे थे। बाबुराव बागुल भी उन युवाओं में से थे जो आंबेडकरी विचार अपनाकर अपना लेखन ,वाचन कर रहे थे। इसलिए जय यह आंबेडकरी विचारधारा से ओतप्रोत युवा अपने सिर पर मैला ढोने का काम नहीं करना चाहता। बावजूद अपना बीमार पिता ,मेहनत करनेवाली माँ, पत्नी के लिए भी ऐसा गंदा काम न कर आत्मसम्मान से अपनी जिन्दगी बिताना चाहता है।

विद्रोह कहानी में विद्रोही चेतना प्रखरता के साथ दिखाई देती है। प्रभू के द्वारा जय को कहा जाता है कि तू एक भंगी जाति का लड़का है। इस नौकरी को प्राप्त करने के लिए कोई दिक्कत नहीं है। इस नौकरी को प्राप्त करने के लिए लोग सौ –डेढ़ सौ रूपये देते हैं । इसका मतलब उस समय ऐसी नौकरी प्राप्त करने के लिए बड़े साहब को घुस देनी पड़ती थी। जो जय को मुफ्त में यह नौकरी मिल रही है ऐसा जय के पिताजी कह रहे हैं। जय के पिताजी ऐसा इसलिए कह रहे हैं कि उनके ऊपर प्रस्थापित व्यवस्था ने जबरन से यह नौकरी एक विशिष्ट वर्ग पर डाली हुई है। हम भंगी है इसलिए हमें यह नौकरी करनी है। जय के पिताजी यह भी कहना चाह रहे हैं कि आप अगर नौकरी करते तो मेरा मृत्यु नजदीक नहीं आता। तेरी माँ की इतनी ख़राब स्थिति नहीं होती। इस पर जय कहता है –"पण भंग्याच्या मुलाने भंग्याची नौकरी केली पाहिजे असं कोणी सांगितल आहे ?"[४]

हिंदी अनुवाद–पर भंगी के लड़के ने भंगी की नौकरी करनी चाहिए ऐसा किसने बताया है।

प्रस्तुत उद्धरण से ज्ञात होता है कि पिताजी और पुत्र में पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच द्वंद्व दिखाया है। प्रभू पारम्परिकता को छोड़ने के लिए तैयार नहीं और जय परंपरा को छोड़कर पढ़ लिखकर परिवर्तन चाहता है। प्रभू पर वर्णव्यवस्था ने दिया हुआ काम नसीब में आया हुआ है, लेकिन जय द्वारा इस काम को नकारना विद्रोही चेतना का प्रतीक है। मनुवादी वर्णव्यवस्था का वहन करने वाले संस्कृति के संवाहक ने काम का जाति पर आधारित बँटवारा किए हुए थे लेकिन २६ जनवरी १९५० में भारत में बाबासाहब डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा लिखित संविधान लागू होने के बाद वर्णव्यवस्था को हटाकर सभी मनुष्य प्राणियों को समान माना गया ।अतः प्रभू वर्णव्यवस्था का वहन मजबूरन ,अज्ञानवश करता है तो प्रभू का बेटा जय समतावादी संवैधानिक विचारों का अनुपालन करता है।

भारत में जातिव्यवस्था की जड़े इतनी मजबूत है कि उसे उखाड़कर फेंकना काफी कष्टदायक,मेहनत वाला काम है । आमतौर पर अस्पृश्य, अछूत जाति का बच्चा जब स्कूल जाता है तब उसको उसके जाति के नाम से ही पहचाना जाता हैं। ऐसा जय के साथ भी होता है जय को भी भंगी नाम से अन्य बच्चे पुकारते थे ।जय यह सब मिटाना चाहता है। अपने पिताजी से वह कहता है ,मैं भंगी जाति की नौकरी नहीं करूँगा , पढ़-लिखकर बड़ा बन जाउँगा ,उच्च शिक्षा प्राप्त करके विद्या का डॉक्टर बनूँगा। पर जय के पिताजी वर्तमान आर्थिक विपन्नता और नौकरी जाने के डर से जय की शिक्षा के सामने मेल नहीं खाता । अपनी माता और पिताजी का मान रखने के लिए वह भंगी का काम करने के लिए तैयार हो जाता है।

ठेकेदार द्वारा संडास को किस तरह से साफ़ किया जाता है ,किस तरह से संडास के डिब्बे भरकर निकाले जाते हैं इसे समझाया जाता है।आस –पास बच्चों ने गंदगी की थी ,मानव की संडास उठाने के काम से घीन आने लगी ,मतली आने लगी। यह दृश देखकर जय की माँ कहती है –"हे काम तुझ्यासाठी नाही ते आमच्यासारख्या अडाणी,मुडदयासाठी आहे. नाक ,डोकं ,मन ,मान तोडून पडलेल्यांसाठी आहे ."[५]

हिंदी अनुवाद–'यह काम तुम्हारे लिए नहीं है ,वह हम अनपढ़ मृतों के लिए है ,नाक ,सर ,गर्दन टूटे हुए अर्थात कोई इज्जत नहीं है ऐसे लोगों के लिए हैं।

प्रस्तुत उद्धरण से ज्ञात होता है कि एक अछूत माँ अपने बेटे को ऐसा गंदगीभरा ,घीन काम करने के लिए मना करती है। उसे पता है कि यह काम कितना गंदा है l यह काम हम जैसे मरे हुए अनपढ़ ,जिनकी कोई इज्जत न हो ऐसे लोगों के लिए यह काम है। व्यवस्था में स्त्री को भी अछूत माना है। अछूत स्त्री को भी ऐसा गंदा ,घृणास्पद काम लगाने वाले के मनुवादी विचारों के खिलाफ जय की विद्रोही चेतना और भी तीव्र होती है। जय की माँ मनुष्य का मैला ढोनेवाला काम न करने के लिए कह रही है। दोनों माँ बेटे का प्यार झलकने लगा। लेकिन जय के अंदर से विद्रोह की आग शांत नहीं हो रही थी। जय के पास संडास ढ़ोकर ले जानेवाली गाड़ी आ गई। जय झट से संडास की ओर जाता है तब वह अपने बेटे को बुलाती है 'जय'कहकर पुकार रही है ,यह पुकार माँ के हृदय से है। ३२ संडास के बीच जय खड़ा है ,उस गंदगी से उसका मन पूरी तरह से अंदर से घीन,गंदगी से भर गया l विचित्र ऐसी दुर्गंधी जुगुप्सा ,घृणा से मन गंदा बन गया था।

हर संडास के नीचे जो संडास के ३२ डिब्बे थे ,उसके आसपास मासिक धर्म(पीरियड) के कपडे ,कपास ,बैंडज ,खून से लथपथ कपड़े ,कीड़े –मकौड़े जैसी

गंदगी और भी प्रखर हो रही थी खतरनाक गंदगी थी। पैसों के लिए ऐसा गंदा काम करने के लिए किसने मजबूर किया। पैसों के लिए इतना गंदा काम करवाकर लेना कितना अमानवीय है। इस सन्दर्भ में बाबुराव बागुल विद्रोह कहानी में लिखते हैं –"आणि हा देश ही येवढा दुष्ट ,दांभिक कसा की काही रूपडयासाठी -पोटासांठी माणसासारख्या माणसाला हे अत्यंत घृणास्पद काम करायला सांगतो ....."[६]

हिंदी अनुवाद–'और यह देश इतना दुष्ट कैसे , इतना पाखंडी कैसा ,कुछ रुपयों के लिए ,पेट के लिए मनुष्य जैसे मनुष्य को यह अत्यंत घृणास्पद काम करने के लिए कहता है।' इससे प्रतीत होता है कि जिस जाति में जन्म लिया उस जाति का काम आपको करना ही होगा। समग्र विश्व में ऐसी जातियों वाला देश भारत ही है। जहाँ मनुष्य जाति में ही जन्म लेता है और जाति में ही मर जाता है। इतना हीन काम मनुष्य की संडास ढोने का मासिक अवधि के कपडे उठाने का ...इस तरह का गंदा काम करने का नहीं यह जय मन में ठान लेने के बाद भी मजबूरन करने के लिए विवश होना पड़ता है। इतना गंदा काम करने के लिए मनुवादी व्यवस्था ने जबरन लाद दिया है।

जय संडास के डिब्बे हाथ में लिए थे इतने में गाड़ीवाला ऊपर से चिल्लाता है ।पूरी गाँव की गंदगी मुझे जमा करनी है। जल्द ला दे... वह जय को देखकर व्यंग से हँस रहा था ,उस समय अपने बेटे जय को इतना गंदा काम करते हुए देखकर जय की माँ बेहोश होकर गिर जाती है। जैसे ही वह नीचे गिरती है तब वह संडास के अंदर न आए इस डर से जय संडास से भरे हुए डिब्बे को खींचने की कोशिश में उसकी उँगलियाँ संडास से भर गई। संडास जय के बदन पर टिप –टिप गिरने लगी। तब गाड़ीवाला जय को बेवकूफ कहके गाली देता है। तब विद्रोह से जलकर जयउस गाड़ीवाले और जिस ओर हाथ जा रहा था उस ओर संडास फेंक रहा था और गाड़ीवाले को दोनों हाथों से खींच लिया और उसे जय कहता है – "जनावरा,मला शिकवतोस?माझ्या जखमेवर मीठ चोळतोस ?मला हसतोस ?असे म्हणत तो पावसाच्या धारेच्या गर्दीने हात पडेल त्याला हाणीत होता ."[७]

हिंदी अनुवाद–जानवर मुझे सीखाता है ? मेरी जख्म पर नमक छिडकता है ? मुझपर हँसता है ? ऐसा कहते हुए अत्यंत तेज गति से हाथ जहाँ पर पड रहा था वहाँ पर उसे मार रहा था।

इससे ज्ञात होता है कि जय यह हीन ,घृणास्पद ,गंदा काम कर रहा था।जय जो संडास उठाने का काम कर रहा था उस काम पर गाड़ीवाला व्यंग्य से हँस रहा था। ऊपर से उसके जख्म पर नमक छिड़क रहा है। इसलिए जय में विद्रोही चेतना और तेज होती है और वह उस गाड़ीवाले को इतना मार रहा था कि जिस ओर हाथ जा रहे थे उस ओर वह मार रहा था। विद्रोह का अग्नि धधक रहा था। अन्याय को मिटाने के लिए संघर्ष कर रहा था। दोनों का झगड़ा लोग केवल देखते हैं बीच में कोई नहीं आ रहा है क्योंकि उसके हाथ संडास से भरे हुए थे, उसी हाथों से गाड़ीवाले को जय मार रहा था। दोनों में संघर्ष चरम पर था। अंत में गाड़ीवाला मार खा – खाकर बेहोश हो गया। तब जय अपनी माँ के गले में गला डालकर जोर से कह रहा था कि माँ मेरी उँगलियाँ काट,मुझे मार डाल ...ह्दय से आनेवाली आवाज से जय की माँ को लगा कि जय अब पागल हो गया है। जय को जो दुःख ,वेदना ,दर्द ,गंदगी से आनेवाली घीन ,जुगुप्सा किसी के भी समझ में नहीं आ रही थी क्योंकि मनुवादी विषमता से भरी हुई मानसिकता वाले लोगों को लग रहा था कि अपना –अपना काम,अपना-अपना भाग्य - जाति पर आधारित है उसे हम बदल नहीं सकते इस मानसिकता वाले लोगों को जय को जो हो रहा था , उनकों कैसे समझ आ सकता ? इस पर बाबुराव बागुल को लगता है कि मनू ने इन लोगों को हर स्तर पर गुलाम किया है वे बदलाव नहीं चाहते। गलत ,अमानवीय परंपरा का वहन करने में बडप्पन मानते हैं।

निष्कर्षतः कहा जाता है कि गुलाम को गुलामी का एहसास करा दो गुलाम उस गुलामी को ध्वंस करने के लिए विद्रोह करेगा इस आंबेडकरवादी विचार का चित्रांकन बाबुराव बागुल के विद्रोह कहानी में बड़ी धीरता के साथ नायक जय के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है। न जाने ऐसे कितने जय भारत जैसे विशाल देश में यह काम कर रहे होंगे ? क्यों इतना अमानवीय ,कम दर्जे का काम करना पड़ रहा है? इसका एक मात्र कारण है –पांच हजार से भी पुरानी व्यवस्था जो मानव –मानव में भेदभाव करती आयी है। मनुष्य होकर मनुष्य का शौच उठाने के लिए कह रही है।इसे मिटाने के लिए ,जड़ से ख़त्म करने के लिए ईंट का जवाब पत्थर से देना होगा,यह भाव इससे निकलता है । जय का विद्रोह उस भेदभाव के खिलाफ है ,विद्रोह उस अन्याय के खिलाफ है ,विद्रोह समता ,स्वतंत्रता ,भाईचारा और सामजिक न्याय प्रतिष्ठापित करने के लिए है। यह विद्रोह अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए है। विद्रोह मनुष्य के साथ मनुष्य जैसा व्यवहार करने के लिए है- विद्रोह उस मनुवादी ,अमानवीय अव्यवस्था को ख़त्म करने के लिए है। अंत में शोधकर्ताओं को लगता है कि बाबासाहब डॉ.भीमराव आंबेडकर के संदेश को जय स्वीकृत कर उस संदेश को अमल में लाता है –शिक्षित बनकर संघर्ष करो और अपनी आनेवाली पीढ़ी को संगठित बनकर परिवर्तन करने के लिए आगाह करता है।

संदर्भ :

१.इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में दलित विमर्श, प्रधान संपादक-डॉ.रमेश कुमार, श्री नटराज प्रकाशन ,ए-५०७/१२,साउथ गामडी एक्सटेंशन ,दिल्ली-११००५३,पृष्ठ संख्या – ३१

२.जेव्हा मी जात चोरली होती, बाबुराव बागुल,अक्षर प्रकाशन ,बारावी आवृत्ती:जानेवारी२०१४ (१२ वां संस्करण-जनवरी २०१४) पृ.सं.६९

3 .जेव्हा मी जात चोरली होती,बाबुराव बागुल,अक्षर प्रकाशन ,बारावी आवृत्ती:जानेवारी२०१४ (१२ वां संस्करण-जनवरी २०१४) पृ.सं.७०

4 .जेव्हा मी जात चोरली होती,बाबुराव बागुल,अक्षर प्रकाशन ,बारावी आवृत्ती:जानेवारी२०१४ (१२ वां संस्करण-जनवरी २०१४) पृ.सं.७०

5 .जेव्हा मी जात चोरली होती,बाबुराव बागुल,अक्षर प्रकाशन ,बारावी आवृत्ती:जानेवारी२०१४ (१२ वां संस्करण-जनवरी २०१४) पृ.सं.७४

6 .जेव्हा मी जात चोरली होती,बाबुराव बागुल,अक्षर प्रकाशन ,बारावी आवृत्ती:जानेवारी२०१४ (१२ वां संस्करण-जनवरी २०१४) पृ.सं.७५

7 .जेव्हा मी जात चोरली होती,बाबुराव बागुल,अक्षर प्रकाशन ,बारावी आवृत्ती:जानेवारी२०१४ (१२ वां संस्करण-जनवरी २०१४) पृ.सं.७६

************* ******************************